3

प्रमुख क्षेत्र

[MAJOR FIELDS]

(व्यष्टि तथा समष्टि)

(MICRO AND MACRO)

आधुनिक अर्थशास्त्री आर्थिक पहलुओं का अध्ययन प्राय: दो शीर्षकों—**व्यष्टि विश्लेषण** (Micro analysis) तथा **समष्टि विश्लेषण** (Macro analysis) में करते हैं। इस समय इन दो विश्लेषणों के ही आधार पर अर्थशास्त्र को दो भागों में विभाजित करने की प्रथा चल पड़ी है। संक्षेप में, आर्थिक विश्लेषण की दो शाखाएं हैं जिन्हें—(i) व्यष्टि अर्थशास्त्र तथा (ii) समष्टि अर्थशास्त्र कहा जाता है। पहले-पहल इन दोनों शब्दों का प्रयोग 1933 में ओसलो विश्वविद्यालय के प्रोफेसर रेगनर फ्रिश (Prof. Ragnar Frisch) द्वारा किया गया था।

व्यष्टि (या सूक्ष्म) अर्थशास्त्र
(MICRO ECONOMICS)

अर्थशास्त्रियों ने अपने अध्ययन का आधार व्यष्टि अर्थशास्त्र को बनाया। माइक्रो (Micro) शब्द ग्रीक शब्द 'माइक्रोज' (Micros) से बना है। इसका अर्थ लघु (Small) या सूक्ष्म से लगाया जाता है। जैसा कि शब्द 'सूक्ष्म' से ही स्पष्ट है इसके अन्तर्गत **किसी विशिष्ट व्यक्ति, विशिष्ट फर्म, विशिष्ट उद्योग अथवा विशिष्ट मूल्य का अध्ययन किया जाता है। दूसरे शब्दों में यह वैयक्तिक इकाइयों** (Individual units) **जैसे एक फर्म, एक उद्योग तथा किसी एक वस्तु के मूल्य के अध्ययन से सम्बन्धित है।**

व्यष्टि अर्थशास्त्र इस बात की जानकारी देता है कि किसी वस्तु अथवा सेवा की कीमत किस प्रकार निर्धारित होती है। यही कारण है कि इस विश्लेषण को '**कीमत सिद्धान्त**' (Price theory) भी कहते हैं।

व्यष्टि अर्थशास्त्र की परिभाषाएं (Definitions of Micro Economics)

निम्न परिभाषाओं के आधार पर सूक्ष्म अर्थशास्त्र की मूलभूत प्रवृत्तियों को समझा जा सकता है :

(1) **प्रो. बोल्डिंग** (Prof. Boulding)—"व्यष्टि अर्थशास्त्र विशिष्ट आर्थिक घटनाओं तथा उनकी पारस्परिक प्रतिक्रिया का अध्ययन है तथा इसमें विशिष्ट आर्थिक मात्राएं एवं उनका निर्धारण भी सम्मिलित है।"

(2) **हैण्डरसन** तथा **क्वाण्ट** (Handerson and Quandt)—"व्यष्टि अर्थशास्त्र में व्यक्तियों व ठीक से परिभाषित व्यक्ति समूहों की आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन होता है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि व्यष्टि अर्थशास्त्र में विशिष्ट आर्थिक इकाइयों के व्यवहार का अध्ययन किया जाता है। उदाहरण के लिए, वस्तु विशेष के मूल्य में वृद्धि हो जाने से उसका उपभोग कम कर दिया जाता है, जबकि उत्पादक उसके उत्पादन को बढ़ाता है। यह एक व्यक्तिगत घटना है जिसका अध्ययन सूक्ष्म अर्थशास्त्र में किया जाता है।

सूक्ष्म (व्यष्टि) अर्थशास्त्र का क्षेत्र (Scope of Micro Economics)

सूक्ष्म अर्थशास्त जिसे '**कीमत सिद्धान्त**' के नाम से भी जाना जाता है के अध्ययन क्षेत्र में अर्थशास्त्र के निम्नलिखित प्रमुख शाखाओं का अध्ययन एवं विश्लेषण किया जाता है :

(1) **उपभोग अथवा मांग का सिद्धान्त** (Consumption or Theory of Demand)—सूक्ष्म अर्थशास्त्र उपभोग अथवा मांग, सिद्धान्त का विस्तृत अध्ययन है। इसके अन्तर्गत उपभोक्ताओं की समस्या तथा उनके व्यवहार, आवश्यकताओं की प्रकृति, उपयोगिता तथा उससे सम्बन्धित नियमों मांग तथा मांग का नियम तथा

Scanned by PDF Scanner

मांग की लोच, उपभोक्ता की मांग तथा उसकी अधिकतम सन्तुष्टि से सम्बन्धित सिद्धान्त, उपयोगिता विश्लेषण तथा तटस्थता वक्र विश्लेषण आदि का अध्ययन तथा विश्लेषण किया जाता है।

(2) **उत्पादन का सिद्धान्त** (Theory of Production)—उत्पादन सूक्ष्म अर्थशास्त्र के अध्ययन का दूसरा प्रमुख विभाग है। इसके अन्तर्गत यह अध्ययन किया जाता है कि एक फर्म उत्पादन के साधनों को एकत्रित करके किन नियमों के अन्तर्गत उत्पादन करती है तथा उसे किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इस तरह, उत्पादन फलन, उत्पादन की प्रक्रिया तथा उत्पादन के नियमों का अध्ययन तथा विश्लेषण उत्पादन सिद्धान्त के अन्तर्गत किया जाता है।

(3) **वस्तु कीमत निर्धारण का सिद्धान्त** (Theory of Product Pricing)—सूक्ष्म अर्थशास्त्र के अन्तर्गत वस्तु कीमत निर्धारण सिद्धान्त का भी अध्ययन किया जाता है। इसमें यह अध्ययन किया जाता है कि बाजार की विभिन्न दशाओं में किसी वस्तु विशेष की कीमत कैसे निर्धारित होती है।

(4) **साधन कीमत सिद्धान्त** (Theory of Factor Pricing)—वस्तुओं को बेचने से जो आय प्राप्त होती है उसका उत्पादन के साधनों में साधन कीमत अर्थात् मजदूरी, ब्याज, लगान, लाभ आदि के रूप में बंटवारा कर दिया जाता है। साधन कीमत के निर्धारण अर्थात् बंटवारे से सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन साधन या कारक कीमत सिद्धान्त में किया जाता है।

(5) **कल्याण का सिद्धान्त** (Theory of Welfare)—आर्थिक कल्याण की बहुत-सी परम्परागत मांग व्यक्तिगत उपभोक्ताओं, उत्पादक अथवा श्रमिक कल्याण से सम्बन्धित है तथा सूक्ष्म अर्थशास्त्र के अध्ययन क्षेत्र का महत्पूर्ण भाग है।

व्यष्टि अर्थशास्त्र की विशेषताएं (Characteristics of Micro Economics)

सूक्ष्म अर्थशास्त्र की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं :

(1) **व्यक्तिगत इकाइयों का अध्ययन**—सूक्ष्म अर्थशास्त्र व्यक्तिगत आय, व्यक्तिगत उत्पादन और व्यक्तिगत उपभोग की व्याख्या में सहायता करता है। इसका सम्बन्ध समूहों या व्यापारिक स्थितियों से नहीं है।

(2) **छोटे-छोटे चरों** (Variables) **का अध्ययन**—सूक्ष्म अर्थशास्त्र में छोटे-छोटे चरों का अध्ययन किया जाता है, इन चरों का प्रभाव इतना कम होता है कि इनके परिवर्तनों का प्रभाव सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था पर नहीं पड़ता है। उदाहरण के लिए, एक उपभोक्ता का उपभोग व एक उत्पादक का उत्पादन सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था को प्रभावित नहीं कर सकता है।

(3) **व्यक्तिगत मूल्य का निर्धारण**—सूक्ष्म अर्थशास्त्र को कीमत सिद्धान्त भी कहा जाता है। इसमें मांग और पूर्ति के द्वारा विभिन्न वस्तुओं के व्यक्तिगत मूल्य निर्धारित किए जाते हैं। इस सन्दर्भ में हम मांग एवं पूर्ति की घटनाओं का भी अध्ययन करते हैं।

व्यष्टि अर्थशास्त्र का उपयोग अथवा महत्व (Uses or Importance of Micro Economics)

सूक्ष्म अर्थशास्त्र की उपयोगिता अथवा महत्व को निम्न बिन्दुओं से स्पष्ट किया जा सकता है :

(1) **सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के लिए आवश्यक** (Essential for Whole Economy)—व्यक्तिगत मांग, व्यक्तिगत उत्पादन, आदि के संयोग से ही सामूहिक मांग और सामूहिक पूर्ति का रूप सामने आता है। अतः सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था की जानकारी के लिए व्यक्तिगत इकाइयों का ज्ञान होना आवश्यक है।

(2) **आर्थिक समस्याओं के निर्णय में सहायक** (Helpful for Economic Problems)—आर्थिक समस्याओं में कीमत निर्धारण व वितरण की समस्या प्रमुख है। उत्पादन का प्रत्येक साधन अपने लिए अधिक पारिश्रमिक की मांग करता है। इसी प्रकार कीमत कितनी ली और दी जाय इन तमाम समस्याओं के निदान के लिए सूक्ष्म अर्थशास्त्र सक्षम (competent) है। परम्परावादी अर्थशास्त्रियों ने कीमत निर्धारण के लिए सूक्ष्म अर्थशास्त्र का प्रयोग किया था। **सूक्ष्म अर्थशास्त्र** में मांग और पूर्ति के मॉडलों का प्रयोग किया जाता है। ये मॉडल हमें बताते हैं कि मांग और पूर्ति की सापेक्षिक शक्तियों के द्वारा कीमत का निर्धारण होता है। जहां इन दोनों का सन्तुलन होता है, वहां साम्य की स्थिति होती है। अतः सूक्ष्म अर्थशास्त्र हमें साम्य की जानकारी देता है।

(3) **आर्थिक नीति के निर्धारण में सहायक** (Helpful for Economic Policies)—सूक्ष्म अर्थशास्त्र का महत्व आर्थिक नीतियों के निर्धारण में भी है। इसमें सरकार की आर्थिक नीतियों का अध्ययन इस दृष्टि से किया जाता है कि उनका व्यक्तिगत या विशिष्ट इकाइयों के कार्यकरण पर कैसा प्रभाव पड़ता है। उदाहरण

Scanned by PDF Scanner

के लिए, हम इस बात का अध्ययन कर सकते हैं कि सरकार की नीतियों का विशिष्ट वस्तुओं की कीमतों तथा मजदूरी पर क्या प्रभाव पड़ता है और सरकार की नीतियाँ साधनों के वितरण को किस प्रकार प्रभावित करती हैं।

(4) **आर्थिक कल्याण की शर्तों का निरीक्षण** (Investigation of Conditions of Economic Welfare)—सूक्ष्म अर्थशास्त्र में जहां व्यक्तिगत उपभोग, व्यक्तिगत रहन-सहन के स्तर, आदि की जानकारी प्राप्त की जाती है, वहीं सार्वजनिक व्यय (Public expenditure) व सार्वजनिक आय (Public Revenue) के प्रभावों की भी जानकारी प्राप्त की जा सकती है। यदि समाज को करारोपण की तुलना में सार्वजनिक व्यय से अधिक लाभ प्राप्त होता है, तो यह कहा जाएगा कि समाज के आर्थिक कल्याण में वृद्धि होगी। यदि सार्वजनिक आय-व्यय के प्रभाव से उपभोक्ता की बचत में कमी आती है, अथवा लोगों के रहन-सहन के स्तर में कमी आती है, तो आर्थिक कल्याण घटेगा। इस प्रकार प्राचीन काल के परम्परावादी अर्थशास्त्रियों ने सूक्ष्म अर्थशास्त्र को आर्थिक कल्याण का मापदण्ड माना था, जो सही है।

(5) **व्यक्तिगत इकाइयों के आर्थिक निर्णय में सहायक** (Useful for decision-making for Individual Units)—सूक्ष्म अर्थशास्त्र व्यक्तिगत इकाइयों (जैसे—फर्म, परिवार, व्यक्तिगत-आय, व्यक्तिगत बचत, आदि) की समस्याओं पर उचित निर्णय लेने में सहायता प्रदान करता है, जैसे—प्रत्येक उपभोक्ता सीमित साधनों से अधिकतम सन्तुष्टि प्राप्त करना चाहता है। आज तो प्रत्येक फर्म **मांग विश्लेषण** (Demand Cost-Analysis) तथा **रेखीय प्रोग्रामिंग** (Linear Programming) का उपयोग करके अधिकतम लाभ प्राप्त करने का प्रयत्न करती है। इन सब बातों का अध्ययन सूक्ष्म अर्थशास्त्र में ही सम्भव है।

सूक्ष्म (व्यष्टि) अर्थशास्त्र की सीमाएं (Limitations of Micro-Economics)

सूक्ष्म अर्थशास्त्र का प्रयोग प्राचीन काल से ही होता आया है, परन्तु उसकी कुछ सीमाएं अथवा दोष भी हैं। प्रमुख सीमाएं अग्र हैं :

(1) **केवल विशिष्ट कार्यों का विश्लेषण** (Analysis of only Micro Activities)—सूक्ष्म अर्थव्यवस्था में केवल व्यक्तिगत इकाइयों का ही अध्ययन किया जाता है, इस प्रकार के विश्लेषण में राष्ट्रीय अथवा विश्वव्यापी अर्थव्यवस्था का सही-सही ज्ञान प्राप्त नहीं हो पाता है, अतः सूक्ष्म अर्थशास्त्रीय अध्ययन एकपक्षीय होता है।

(2) **अवास्तविक मान्यताएँ** (Unreal Assumptions)—सूक्ष्म अर्थशास्त्र अवास्तविक मान्यताओं पर आधारित है इसलिए इसे काल्पनिक भी कहा जाता है। सूक्ष्म अर्थशास्त्र केवल पूर्ण रोजगार वाली अर्थव्यवस्था में ही सही कार्य कर सकता है, जबकि पूर्ण रोजगार की धारणा काल्पनिक है। इस सन्दर्भ में **प्रो. कीन्स** (Keynes) ने लिखा है कि "**पूर्ण रोजगार की कल्पना करना अपनी कठिनाइयों से मुख मोड़ना है।**"

(3) **कुछ आर्थिक समस्याओं के लिए अनुपयुक्त** (Unable for some Economic Problems)—कुछ आर्थिक समस्याएं ऐसी हैं, जिनका अध्ययन सूक्ष्म अर्थशास्त्र में नहीं हो सकता है। उदाहरण के लिए, मौद्रिक नीति, राजस्व नीति, औद्योगिक नीति, आयात-निर्यात नीति, आदि। यही कारण है कि आज व्यापक अर्थशास्त्र का बोलबाला अधिक हो गया है।

(4) **सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था पर विचार नहीं करता है** (It does not study the Whole Economy)—सूक्ष्म अर्थशास्त्र व्यक्तिगत इकाइयों के आधार पर व्यापक निर्णय ले लेता है या व्यक्तिगत धारणाओं को व्यापक क्षेत्र के लिए भी सही मान लेता है, परन्तु व्यवहार में यह सही नहीं होता है। उदाहरण के लिए, बचत करना व्यक्तिगत दृष्टिकोण से तो उचित है, परन्तु सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के लिए सही नहीं क्योंकि इससे उपभोग, उत्पादन व रोजगार पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

उपर्युक्त सीमाओं के कारण सूक्ष्म अर्थशास्त्र का प्रयोग सीमित हो गया है। 1928 की विश्वव्यापी मन्दी के बाद अर्थशास्त्रियों का ध्यान व्यापक अर्थशास्त्र की ओर जाने लगा।

समष्टि अथवा व्यापक अर्थशास्त्र
(MACRO ECONOMICS)

1928 की विश्वव्यापी मन्दी तथा प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों के पूर्ण रोजगार के सिद्धान्त की विफलता तथा प्रो. कीन्स की प्रसिद्ध पुस्तक '*The General Theory of Employment, Interest and Money*' (1936) के प्रकाशन से व्यापक अर्थशास्त्र को अधिक प्रोत्साहन मिला। स्वयं कीन्स ने व्यापक अर्थशास्त्रीय अध्ययन से

Scanned by PDF Scanner

अपने कथन को सही सिद्ध किया। कीन्स के अनुसार राष्ट्रीय एवं विश्वव्यापी आर्थिक समस्याओं का अध्ययन व्यापक अर्थशास्त्रीय दृष्टिकोण से किया जाना चाहिए। यद्यपि कीन्स ने सूक्ष्म अर्थशास्त्र के अध्ययन को भी महत्वपूर्ण माना है।

समष्टि अर्थशास्त्र का अर्थ (Meaning of Macro Economics)

व्यापक अर्थशास्त्र, अर्थशास्त्र की वह शाखा है जो किसी एक इकाई का नहीं अपितु सभी इकाइयों के आर्थिक आचरण अथवा व्यवहार का अध्ययन करता है। इस विश्लेषण में सामूहिक दशाओं का अध्ययन किया जाता है, इसलिए इसे सामूहिक अर्थशास्त्र (Aggregative Economics) भी कहा जाता है। इसमें अर्थव्यवस्था के कुल उत्पादन, कुल उपभोग, कुल बचत व कुल विनियोग का अध्ययन करते हैं। इस प्रकार यह एक परिवार से नहीं वरन् सभी परिवारों से, एक फर्म से नहीं वरन् सभी फर्मों से, एक उद्योग से नहीं वरन् अर्थव्यवस्था की सम्पूर्ण औद्योगिक संरचना से सम्बन्धित है।

समष्टि अर्थशास्त्र की परिभाषाएं (Definitions of Macro Economics)

समष्टि अर्थशास्त्र की प्रमुख परिभाषाएं निम्नलिखित हैं :

(1) **प्रो. बोल्डिंग** (Boulding)—"समष्टि अर्थशास्त्र में व्यक्तिगत मात्राओं का अध्ययन नहीं किया जाता है, बल्कि इन मात्राओं के योग का अध्ययन किया जाता है। इसका सम्बन्ध व्यक्तिगत आय से नहीं बल्कि राष्ट्रीय आय से होता है, व्यक्तिगत कीमतों से नहीं, बल्कि सामान्य कीमत-स्तर से होता है, व्यक्तिगत उत्पादन से नहीं, बल्कि राष्ट्रीय उत्पादन से होता है।"

(2) **प्रो. शुल्ज** (Prof. Shultz), "समष्टि अर्थशास्त्र का मुख्य यन्त्र राष्ट्रीय आय विश्लेषण करता है।"

(3) **प्रो. चेम्बरलिन** (Chamberlin), "समष्टि अर्थशास्त्र कुल सम्बन्धों का अध्ययन करता है।"

समष्टि अर्थशास्त्र का क्षेत्र (Scope of Macro Economics)

समष्टि अर्थशास्त्र के क्षेत्र में निम्नलिखित विषयों का अध्ययन किया जाता है :

(1) **राष्ट्रीय आय का सिद्धान्त** (Theory of National Income)—समष्टि अर्थशास्त्र में राष्ट्रीय आय की धारणा, उसके विभिन्न तत्वों, माप की विधियों तथा सामाजिक लेखांकनों (Social Accounting) का अध्ययन किया जाता है।

(2) **रोजगार का सिद्धान्त** (Theory of Employment)—समष्टि अर्थशास्त्र में रोजगार तथा बेरोजगारी की समस्याओं का अध्ययन किया जाता है। इसमें रोजगार निर्धारण के विभिन्न तत्वों जैसे, प्रभावपूर्ण मांग, कुल पूर्ति, कुल उपयोग, कुल निवेश, कुल बचत, गुणक आदि का अध्ययन किया जाता है।

(3) **मुद्रा का सिद्धान्त** (Theory of Money)—रोजगार के स्तर पर मुद्रा की मांग तथा पूर्ति में होने वाले परिवर्तनों का काफी प्रभाव पड़ता है। अतएव समष्टि अर्थशास्त्र में मुद्रा के कार्यों तथा उससे सम्बन्धित सिद्धान्तों का अध्ययन किया जाता है। बैंकों तथा अन्य वित्तीय संस्थाओं का भी अध्ययन किया जाता है।

(4) **सामान्य कीमत स्तर का सिद्धान्त** (Theory of General Price Level)—समष्टि अर्थशास्त्र में सामान्य कीमत स्तर के निर्धारण तथा उसमें होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन किया जाता है। समष्टि अर्थशास्त्र में मुद्रा-स्फीति (Inflation) अर्थात् कीमतों में होने वाली सामान्य वृद्धि तथा मुद्रा-अवस्फीति (Deflation) अर्थात् कीमतों में होने वाली सामान्य कमी से सम्बन्धित समस्याओं का भी अध्ययन किया जाता है।

(5) **आर्थिक विकास का सिद्धान्त** (Theory of Economic Growth)—समष्टि अर्थशास्त्र में आर्थिक विकास अर्थात् प्रति व्यक्ति वास्तविक आय में होने वाली वृद्धि से सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन किया जाता है। अल्पविकसित अर्थव्यवस्थाओं के आर्थिक विकास का अध्ययन किया जाता है। सरकार की राजस्व तथा मौद्रिक नीतियों का अध्ययन भी किया जाता है।

(6) **अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का सिद्धान्त** (Theory of International Trade)—समष्टि अर्थशास्त्र में विभिन्न देशों के बीच होने वाले व्यापार का भी अध्ययन किया जाता है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के सिद्धान्त, टैरिफ, संरक्षण आदि समस्याओं के अध्ययन का समष्टि अर्थशास्त्र में काफी महत्व है।

समष्टि अर्थशास्त्र की विशेषताएं (Characteristics of Macro Economics)

व्यापक अर्थशास्त्र की प्रमुख विशेषताएं निम्न हैं :

(1) **व्यापक दृष्टिकोण**—इसका दृष्टिकोण व्यापक है। इसमें '**सूक्ष्म चरों**' को महत्व नहीं दिया जाता है। व्यापक अर्थशास्त्र में राष्ट्रीय एवं विश्वव्यापी आर्थिक समस्याओं का हल ढूंढ़ा जाता है। व्यापक अर्थशास्त्र गतिशील व्यवस्था को अधिक महत्व देता है।

Scanned by PDF Scanner

(2) **व्यापक विश्लेषण**—व्यापक अर्थशास्त्र में व्यापक विश्लेषण का महत्वपूर्ण स्थान होता है। इसमें सरकार की मौद्रिक एवं राजस्व नीतियों के प्रभावों का अध्ययन किया जाता है।

(3) **व्यक्ति की अपेक्षा समूह का हित**—व्यापक अर्थशास्त्र में व्यक्ति की अपेक्षा समूह (group) का ध्यान अधिक रखा जाता है। आज के युग में विकासशील व विकसित देश आर्थिक नियोजन के द्वारा अपना आर्थिक विकास करने में तत्पर हैं। नियोजन में सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है। हम ऐसी योजनाओं को अधिक उपयोगी मानते हैं जिनके द्वारा अधिकतम लोगों का अधिकतम कल्याण हो सके।

(4) **परस्पर-निर्भरता**—सूक्ष्म अर्थशास्त्र में साम्य स्तर के परिवर्तनों का प्रभाव अन्य इकाइयों पर नहीं पड़ता है, जबकि व्यापक मात्राएं परस्पर इतनी सम्बद्ध होती हैं कि एक में परिवर्तन करने पर अन्य मात्राओं के साम्य स्तर में भी परिवर्तन हो जाते हैं।

समष्टि अर्थशास्त्र की आवश्यकता एवं महत्व (Need and Importance of Macro Economics)

समष्टि अर्थशास्त्र की उपयोगिता को निम्न बिन्दुओं से स्पष्ट किया जा सकता है :

(1) **आर्थिक नीति के निर्धारण में महत्व** (Importance in Economic Policy Formulations)—आज अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, रोजगार नीति, विकास सिद्धान्त, सामान्य कीमत, मौद्रिक नीति जैसे गम्भीर विषयों का अध्ययन व्यापक अर्थशास्त्र में किया जाता है। सरकार व्यापक मात्राओं की सहायता से आर्थिक विकास की योजनाएं बनाती है, जिसमें राष्ट्रीय आय, उत्पादन एवं रोजगार को बढ़ाने के लिए बचत तथा विनियोग के लक्ष्यों (Targets) का निर्धारण किया जाता है। आज अल्पविकसित देशों के सामने मुख्य समस्या विकास की है, अतः इन तमाम समस्याओं का समाधान व्यापक अर्थशास्त्र में ही खोजा जा सकता है।

(2) **आर्थिक विकास का मापदण्ड** (Measuring Rod of Economic Development)—जब कभी हम दो या दो से अधिक देशों के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करते हैं, तब वहां के लोगों के रहन-सहन के स्तर का अध्ययन कर जो निष्कर्ष निकाले जाते हैं वे उतने सही नहीं होते हैं। सही स्थिति की जानकारी प्राप्त करने के लिए व्यापक अर्थशास्त्र की सहायता ली जा सकती है।

(3) **सूक्ष्म अर्थशास्त्र के लिए उपयोगी** (Useful for Micro Study)—एक फर्म की मजदूरी का निर्धारण एक उद्योग की और एक उद्योग की मजदूरी का निर्धारण अर्थव्यवस्था में मजदूरी की सामान्य स्थिति से प्रभावित होता है। एक वस्तु की कीमत भी बहुत कुछ सामान्य कीमत स्तर से प्रभावित होती है। मुद्रा प्रसार एवं मुद्रा संकुचन की स्थिति में वस्तु का मूल्य बढ़ता-घटता है। इस प्रकार स्वयं सूक्ष्म अर्थशास्त्र के अध्ययन के लिए भी व्यापक अर्थशास्त्र का अध्ययन आवश्यक है।

(4) **जटिल अर्थव्यवस्था के अध्ययन के लिए आवश्यक** (Importance in Complex Economy)—वर्तमान समय में आर्थिक प्रणाली काफी जटिल हो चुकी है और आर्थिक तत्वों की निर्भरता एक-दूसरे पर बढ़ रही है। ऐसी स्थिति में व्यापक अर्थशास्त्र का अध्ययन अधिक उपयोगी होता है।

व्यापक (या समष्टि) अर्थशास्त्र की सीमाएं (Limitations of Macro Economics)

व्यापक अर्थशास्त्र की सीमाएं अथवा दोष निम्न हैं :

(1) **निष्कर्षों का व्यावहारिक न होना**—प्रायः व्यापक मात्राओं का विश्लेषण कर, प्राप्त होने वाली नीतियां गलत होती हैं। उदाहरण के लिए, सामान्य कीमत सूचकांक को स्थिर देख कर यह कहना गलत है कि कीमत-स्तर स्थिर है, क्योंकि कुछ वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि होने तथा अन्य वस्तुओं की कीमतों में कमी से सामान्य कीमत-स्तर तो स्थिर मालूम पड़ता है, परन्तु व्यक्तिगत वस्तुओं की कीमत में उतार-चढ़ाव होते रहते हैं।

(2) **व्यक्तिगत इकाई को महत्व न देना गलत**—व्यापक आर्थिक विश्लेषण में व्यक्तिगत इकाई की अपेक्षा वृहद इकाइयों को महत्व दिया जाता है। हम जानते हैं कि छोटी-छोटी आर्थिक इकाइयों के योग से सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था की दीवार खड़ी होती है और जो इकाइयां इस दीवार में नींव का कार्य करती हैं उनकी उपेक्षा कर दी जाती है, जो गलत है।

(3) **समूह की संरचना को महत्व न देना**—व्यापक अर्थशास्त्र में समूह के आकार-प्रकार का ही अध्ययन किया जाता है न कि संरचना का। जब तक समूह की बनावट तथा उसके सभी अंगों की सही-सही जानकारी नहीं कर ली जाती है, तब तक इस अध्ययन में की जाने वाली भविष्यवाणियां (forecasts) निराधार होंगी

Scanned by PDF Scanner

इसके अतिरिक्त, जो सुझाव दिए जाएंगे वे भी महत्वहीन होंगे। अतः यह कहना सही है कि समूह के आधार पर भविष्यवाणी करना या सुझाव देना तब तक उपयुक्त नहीं होगा, जब तक समूह की बनावट और उसके अंगों के स्वभाव तथा आपसी सम्बन्धों की पूर्ण जानकारी प्राप्त न कर ली जाय।

(4) **सामूहिक मात्राएं व्यक्तिगत मात्राओं का सही प्रतिनिधित्व नहीं कर सकती हैं**—अर्थव्यवस्था का एक समूह अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों को प्रभावित नहीं कर सकता है। उदाहरण के लिए, कुल मांग में वृद्धि के कारण उत्पादन बढ़ेगा, परन्तु कुछ फर्में ऐसी भी होंगी जिनकी लागत व उत्पादन घट-बढ़ सकता है। इसी प्रकार आय-स्तर के बढ़ जाने से कुछ वस्तुओं का उपभोग बढ़ता है, तो कुछ का घटता भी है। जिनका उपभोग कम होता है उनका उत्पादन घटता है और जिनका उपभोग बढ़ता है उनका उत्पादन बढ़ाया जाता है। ऐसी भिन्नताओं के कारण सामूहिक अध्ययन व्यक्तिगत मात्राओं का सही-सही चित्र प्रस्तुत करने में असमर्थ होता है।

सूक्ष्म तथा व्यापक प्रणालियों की परस्पर-निर्भरता
(INTER-DEPENDENCE OF THE MICRO AND MACRO ANALYSIS)

सूक्ष्म तथा व्यापक अर्थशास्त्र आर्थिक विश्लेषण के दो अलग-अलग तरीके हैं। **ये दोनों आपस में प्रतियोगी न होकर एक-दूसरे के पूरक हैं**, सूक्ष्म व व्यापक अर्थशास्त्र की विशेषताओं तथा उपयोगिताओं का अध्ययन कर लेने के बाद ऐसी धारणा नहीं बनानी चाहिए कि ये दोनों स्वतन्त्र अध्ययन हैं। दोनों की अपनी-अपनी विशेषताएं व सीमाएं अवश्य हैं, परन्तु ये दोनों एक-दूसरे की पूरक भी हैं। नीचे इस बात को स्पष्ट किया जा रहा है :

(1) **व्यापक आर्थिक विश्लेषण में सूक्ष्म आर्थिक विश्लेषण की आवश्यकता**—व्यापक अर्थशास्त्र का सूक्ष्म अर्थशास्त्र के साथ जो घनिष्ठ सम्बन्ध है उसे नीचे दिया जा रहा है :

(i) **सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था को समझने तथा उसके सम्बन्ध में नीतियों का निर्धारण करने के लिए हम व्यक्तिगत इकाइयों के संयोगों का अध्ययन करते हैं।** जब तक व्यक्तिगत इकाइयों की सही जानकारी प्राप्त नहीं हो जाती है, तब तक व्यापक आर्थिक निष्कर्ष सही नहीं होंगे, अतः हम कह सकते हैं कि सूक्ष्म अर्थशास्त्र व्यापक अर्थशास्त्र की आधारशिला (Base) है। उदाहरण के लिए, जिस प्रकार व्यक्तियों के मेल से समाज बनता है, उसी प्रकार फर्मों के मेल से उद्योग और उद्योगों के मेल से अर्थव्यवस्था का निर्माण होता है। अतः सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था को समझने के लिए सभी व्यक्तिगत इकाइयों की जानकारी होना आवश्यक है।

(ii) **अर्थव्यवस्था की सही जानकारी तब ही हो सकती है कि, जब हमें उन सिद्धान्तों का ज्ञान हो जो परिवारों, व्यक्तियों व फर्मों के व्यवहार पर प्रभाव डालते हैं।** इस प्रकार व्यापक आर्थिक विश्लेषण का कार्य सूक्ष्म आर्थिक विश्लेषण के बिना पूरा नहीं होता है, क्योंकि व्यक्तिगत अध्ययन के आधार पर ही सम्पूर्ण अध्ययन कर सकते हैं। प्रो. सैम्युलसन (Prof. Samuelson) के अनुसार, "वास्तव में सूक्ष्म व व्यापक अर्थशास्त्र में परस्पर कोई विरोध नहीं है, ये दोनों अत्यन्त आवश्यक हैं। यदि आप एक को समझते हैं और दूसरे के बारे में अनभिज्ञ हैं, तो आप अर्द्धशिक्षित ही हैं।"

(iii) **यदि समाज द्वारा वस्तुओं की मांग बढ़ाई जा रही है, तो सामान्यतया यह कहा जाएगा कि फर्में उत्पादन बढ़ायेंगी, परन्तु जिन फर्मों की उत्पादन लागत बढ़ रही होगी** उन फर्मों के लिए ऊंची कीमतों पर भी उत्पादन को बढ़ाना आसान नहीं होगा। इसी प्रकार आय के बढ़ जाने से कुछ वस्तुओं की मांग बढ़ जाती है और कुछ की घटती है। माना कम आय पर लोग साइकिल की मांग करते थे, अब आय के बढ़ने से साइकिल की अपेक्षा स्कूटर की मांग बढ़ जाती है। फलतः साइकिल **का उत्पादन घटेगा और स्कूटर का उत्पादन बढ़ेगा।**

(2) **सूक्ष्म आर्थिक विश्लेषण में व्यापक विश्लेषण की आवश्यकता**—जिस प्रकार व्यापक आर्थिक विश्लेषण में सूक्ष्म आर्थिक विश्लेषण सहायक है उसी प्रकार सूक्ष्म आर्थिक विश्लेषण में व्यापक आर्थिक विश्लेषण भी आवश्यक है। जैसे :

(i) **प्रायः एक व्यक्तिगत उत्पादक के सामने हमेशा यह समस्या होती है कि वह साधनों के पारिश्रमिक का निर्धारण किस प्रकार करे।** इस समस्या का अध्ययन विशिष्ट अर्थशास्त्र में होना चाहिए, परन्तु ऐसा नहीं होता है। एक उत्पादक अपने साधनों के पारिश्रमिक का निर्धारण अपनी फर्म की सामर्थ्य के अनुसार नहीं कर सकता है। पारिश्रमिक के निर्धारण के लिए अन्य सम्बन्धित बातों को भी ध्यान में रखना होगा। उदाहरण के लिए, एक फर्म के साधनों के पारिश्रमिक का सम्बन्ध अन्य स्थानीय फर्मों के साधनों के पारिश्रमिक से सम्बन्धित

Scanned by PDF Scanner

होता है। यही नहीं, व्यक्तिगत फर्म के साधनों के पारिश्रमिक पर सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था में प्रचलित साधनों के पारिश्रमिक का भी प्रभाव पड़ता है, इसलिए व्यापक अर्थशास्त्रीय विश्लेषण की आवश्यकता होती है।

(ii) **कोई फर्म अपना कितना माल बेच पायेगी, यह केवल उस फर्म के द्वारा उत्पादित** वस्तु की कीमत पर ही निर्भर नहीं करेगा, बल्कि इस बात पर भी निर्भर करेगा कि समाज में नागरिकों की क्रय-शक्ति (Purchasing power) कितनी है। मूल्य-स्तर कितना ही नीचा क्यों न हो, यदि समाज की क्रय-शक्ति कम है, तो वस्तुओं की बिक्री अधिक नहीं होगी। इसके विपरीत, वस्तु का मूल्य ऊंचा होने पर भी यदि समाज की क्रय-शक्ति ऊंची है, तो वस्तुओं की बिक्री अधिक होगी।

(iii) **फर्म को अपने उत्पादन की मात्रा निश्चित करते समय समाज की सम्पूर्ण मांग, समाज की क्रय-शक्ति, रोजगार-स्तर तथा आय-स्तर जैसी बातों को भी ध्यान में रखना होगा।**

संक्षेप में, कहा जा सकता है कि कोई भी फर्म मूल्य, मजदूरी तथा उत्पादन को स्वतन्त्र रूप से निर्धारित नहीं कर सकती है। इस प्रकार विशिष्ट आर्थिक विश्लेषण के कार्यों की पूर्ति के लिए व्यापक आर्थिक विश्लेषण का सहारा लेना पड़ता है।

उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि व्यापक तथा सूक्ष्म अर्थशास्त्र एक-दूसरे के पूरक हैं। इस सन्दर्भ में प्रो. गार्डनर (Prof. Gardner) के कथन को प्रस्तुत किया जा सकता है कि "व्यापक एवं सूक्ष्म अर्थशास्त्र के बीच विभाजन की कोई सुनिश्चित सीमा-रेखा नहीं खींची जा सकती है। अर्थशास्त्र के विषय-क्षेत्र के अन्तर्गत दोनों का ही समान स्थान है। सुविधा की दृष्टि से सही परिणामों पर पहुंचने के लिए व्यापक अर्थशास्त्र की समस्याओं का समाधान व्यापक अर्थशास्त्र के उपकरणों से एवं सूक्ष्म अर्थशास्त्र की समस्याओं का समाधान सूक्ष्म अर्थशास्त्र के उपकरणों से प्राप्त किया जाना चाहिए।

अन्त में, हम कह सकते हैं कि सूक्ष्म तथा व्यापक अर्थशास्त्र में घनिष्ठ सम्बन्ध होते हुए भी दोनों में मूलभूत अन्तर है, जिसे ध्यान में रखते हुए प्रयोग करना चाहिए, तभी समस्याओं का सही हल निकाला जा सकता है।

सूक्ष्म एवं व्यापक अर्थशास्त्र में अन्तर
(DIFFERENCE BETWEEN MICRO AND MACRO ECONOMICS)

	सूक्ष्म अर्थशास्त्र (Micro Economics)	व्यापक अर्थशास्त्र (Macro Economics)
1.	**व्यक्तिगत आर्थिक इकाई** (Individual economic unit)—सूक्ष्म अर्थशास्त्र में व्यक्तिगत आर्थिक इकाइयों का अध्ययन किया जाता है; जैसे, किसी विशेष व्यक्ति, परिवार और फर्म का अध्ययन।	**सामूहिक योगों और औसतों का अध्ययन** (Aggregate economic units)—व्यापक अर्थशास्त्र में सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था की आर्थिक इकाइयों का अध्ययन किया जाता है; जैसे, राष्ट्रीय आय, कुल उपभोग, सामान्य कीमत स्तर, आदि।
2.	**व्यक्ति और व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन** (Stury of individual and his behaviour)—सूक्ष्म अर्थशास्त्र में हम उस व्यक्ति का अध्ययन करते हैं जो मरणशील है और उसी के व्यवहार के आधार पर आर्थिक सिद्धान्तों का निर्माण किया जाता है।	**समाज और समाज के व्यवहार का अध्ययन** (Study of society and its behaviour)—व्यापक अर्थशास्त्र में हम समाज का अध्ययन करते हैं। समाज अमर होता है, केवल इसके रूप में परिवर्तन होता रहता है। समाज के व्यवहार में और व्यक्ति के व्यवहार में अन्तर हो सकता है। यह आवश्यक नहीं कि एक व्यक्ति के व्यवहार के आधार पर समाज का व्यवहार समूहीकरण पद्धति से प्राप्त हो सके। **प्रो. बोल्डिंग** (Boulding) ने इसे स्पष्ट करते हुए कहा है कि एक विशिष्ट पेड़ के अध्ययन के आधार पर सम्पूर्ण जंगल के चित्र को स्पष्ट नहीं किया जा सकता।

Scanned by PDF Scanner

3. **कीमत सिद्धान्त** (Price theory)—सूक्ष्म अर्थशास्त्र में पूर्ण रोजगार की मान्यता के आधार पर साधनों के बंटवारे, उत्पादन साधनों की कीमत, वस्तु की कीमत, उत्पादन का सिद्धान्त, आदि समस्याओं का अध्ययन सीमान्त विश्लेषण के आधार पर किया जाता है। इसी कारण सूक्ष्म अर्थशास्त्र की कीमत सिद्धान्त (price theory) कहा जाता है।

4. **व्यक्तिगत दृष्टिकोण परिवर्तनशील** (Dynamic outlook of individual)—विशिष्ट आर्थिक इकाइयों में अधिक परिवर्तनशील होता है। समय के साथ व्यक्तिगत आर्थिक चर-मूल्यों (individual economic variables) में अधिक परिवर्तन होता है।

5. **आर्थिक अध्ययन की प्रकृति अल्पाधिकार** (Micro economic studies are of the nature of the problem of oligopoly)—अल्पाधिकार उत्पादन की वह विधि है जिसमें वस्तु के बहुत कम उत्पादक होते हैं। अतः कोई भी उत्पादक अपने उत्पादन और कीमत सम्बन्धी निर्णय लेते समय दूसरी उत्पादन इकाइयों के निर्णयों को ध्यान में अवश्य रखता है। इसी प्रकार सूक्ष्म अर्थशास्त्र में प्रत्येक आर्थिक इकाई दूसरी इकाइयों का ध्यान रखती है।

आय व रोजगार सिद्धान्त (Theory of income and employment)—अर्थशास्त्र में पूर्ण रोजगार की अवास्तविक मान्यता नहीं ली जाती बल्कि यह माना जाता है कि अर्थव्यवस्था में अपूर्ण रोजगार एक सामान्य स्थिति है। व्यापक अर्थशास्त्र का क्षेत्र साधनों के पूर्ण उपयोग → राष्ट्रीय आय → रोजगार स्तर से सम्बन्धित है। रोजगार का स्तर कुल उपभोग, कुल निवेश तथा कुल बचत को प्रभावित करता है। व्यापक अर्थशास्त्र का सम्बन्ध राष्ट्रीय आय से लेकर आर्थिक विकास के सिद्धान्त तक होता है।

सामाजिक दृष्टिकोण में कम परिवर्तन (Less dynamic outlook of society)—सामाजिक आर्थिक इकाइयों में परिवर्तन होता तो है, परन्तु कम। समय के साथ सामूहिक आर्थिक चर मूल्यों में कम परिवर्तन होता है।

व्यापक आर्थिक अध्ययन की प्रकृति पूर्ण प्रतियोगिता या पूर्ण एकाधिकार (Macro economic studies are of the nature of the problem of perfect competition and pure monopoly)—पूर्ण प्रतियोगिता में बाजार में विक्रेताओं और क्रेताओं की संख्या बहुत अधिक होती है और सम्पूर्ण बाजार में वस्तु की केवल एक ही कीमत प्रचलित होती है। पूर्ण एकाधिकार में बाजार में वस्तु का अकेला विक्रेता होता है और वस्तु के स्थानापन्न भी नहीं पाये जाते। कहने का अर्थ यह है कि दोनों ही बाजार स्थितियों में कीमत निर्धारित करते समय प्रतियोगियों के व्यवहार के अध्ययन की आवश्यकता नहीं होती। प्रो. जे. के. मेहता ने व्यापक अर्थशास्त्र को क्रूसो अर्थशास्त्र कहा है।

महत्वपूर्ण प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. सूक्ष्म तथा व्यापक अर्थशास्त्र के उपयोग एवं सीमाओं की विवेचना कीजिए।
   [**संकेत**—दोनों आर्थिक विश्लेषणों को समझाने के बाद दोनों की उपयोगिता व दोषों का उल्लेख करें।]
2. "एक अर्थशास्त्री को वृहद् (मेक्रो) के साथ ही साथ अणु (माइक्रो) अर्थशास्त्र का भी अध्ययन करना होता है। ये दोनों एक-दूसरे की वैकल्पिक अध्ययन विधि न होकर आपस में पूरक हैं।" विवेचन कीजिए।
   [**संकेत**—प्रश्न के उत्तर में पहले व्यापक व सूक्ष्म अर्थशास्त्र की व्याख्या करके दोनों को समझाइए। अन्त में, यह बतावें कि ये दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं।]
3. सूक्ष्म अर्थशास्त्र तथा व्यापक अर्थशास्त्र में भेद स्पष्ट कीजिए। सूक्ष्म अर्थशास्त्र की आवश्यकता एवं उसके महत्व तथा उसकी सीमाएं बताइए।
   [**संकेत**—प्रश्न के उत्तर में परिभाषाओं के आधार पर संक्षेप में सूक्ष्म व व्यापक अर्थशास्त्र के भेद को स्पष्ट करें। बाद में केवल सूक्ष्म अर्थशास्त्र की आवश्यकता व उसके महत्व तथा सीमाओं का उल्लेख करें। ये सभी बातें इस अध्याय में दी गई हैं।]
4. 'समष्टि-अर्थशास्त्र' एवं 'व्यष्टि-अर्थशास्त्र' की अवधारणाओं के बीच भेद बताइए। अर्थशास्त्र के अध्ययन में इसका महत्व क्या है?
5. व्यष्टि (माइक्रो) तथा समष्टि (मेक्रो) अर्थशास्त्र में अन्तर बताइए। ये दोनों एक-दूसरे की पूरक हैं न कि अध्ययन की वैकल्पिक रीतियां। विवेचना कीजिए।
   [**संकेत**—प्रश्न सं. 2 के संकेत की सहायता से उत्तर दें।]

Scanned by PDF Scanner

6. व्यष्टि अर्थशास्त्र की परिभाषा दीजिए। व्यष्टि अर्थशास्त्र का क्षेत्र क्या है?
7. समष्टि अर्थशास्त्र से क्या अभिप्राय है इसके क्षेत्र का वर्णन कीजिए।
8. अर्थशास्त्र की प्रकृति की विवेचना कीजिए। 'अर्थशास्त्र एक विज्ञान है' इसके पक्ष मे तर्क दीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. सूक्ष्म अर्थशास्त्र से क्या अभिप्राय है?
2. सूक्ष्म/व्यष्टि अर्थशास्त्र का अध्ययन क्षेत्र बताइए।
3. सूक्ष्म अर्थशास्त्र की विशेषताएं बताइए।
4. सूक्ष्म अर्थशास्त्र की कमियां बताइए।
5. व्यष्टि अर्थशास्त्र तथा समष्टि अर्थशास्त्र में अन्तर बताइए।
6. समष्टि अर्थशास्त्र से क्या अभिप्राय है?
7. व्यष्टि अर्थशास्त्र तथा समष्टि अर्थशास्त्र की परस्पर निर्भरता को स्पष्ट कीजिए।
8. व्यापक अर्थशास्त्र की प्रमुख विशेषताएं बताइए।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. कीमत सिद्धान्त का दूसरा नाम है :
   (A) समिष्ट अर्थशास्त्र (B) कीमत नियन्त्रण
   (C) लोक वित्त (D) व्यष्टि अर्थशास्त्र
2. व्यष्टि अर्थशास्त्र में निम्नलिखित में से किसकी उपयुक्तता नहीं है?
   (A) भविष्यवाणी (B) आर्थिक नीतियां
   (C) आर्थिक कल्याण (D) पूर्ण रोजगार
3. समष्टि अर्थशास्त्र का सम्बन्ध है :
   (A) सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था में उत्पादित वस्तुओं तथा सेवाओं के स्तर से
   (B) सामान्य कीमत स्तर से
   (C) राष्ट्रीय आय से (D) इनमें से सभी
4. समष्टि अर्थशास्त्र अध्ययन करता है :
   (A) एक व्यक्ति विशेष का (B) एक उद्योग का
   (C) सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था का (D) इनमें से कोई नहीं
5. निम्नलिखित में से कौन-सा समष्टि अर्थशास्त्र का क्षेत्र नहीं है?
   (A) राष्ट्रीय आय का सिद्धान्त (B) मुद्रा का सिद्धान्त
   (C) व्यक्तिगत मांग का सिद्धान्त (D) आर्थिक विकास का सिद्धान्त
6. एक फर्म द्वारा मजदूरी का निर्धारण किस अर्थशास्त्र का अध्ययन है ?
   (A) व्यष्टि अर्थशास्त्र (B) समष्टि अर्थशास्त्र
   (C) (A) तथा (B) दोनों (D) इनमें से कोई नहीं
7. समष्टि अर्थशास्त्र का वैकल्पिक नाम निम्नलिखित में से कौन-सा है?
   (A) कीमत सिद्धान्त (B) साधन कीमत सिद्धान्त
   (C) आय तथा रोजगार सिद्धान्त (D) इनमें से कोई नहीं
8. निम्नलिखित में से कौन-सी समस्या व्यष्टि अर्थशास्त्र की नहीं है?
   (A) उपभोक्ता की मांग (B) फर्म द्वारा मजदूरी का निर्धारण
   (C) सामान्य कीमत स्तर (D) फर्म द्वारा किराए का निर्धारण
9. व्यष्टि आर्थिक चर का उदाहरण है :
   (A) कीमत स्तर (B) राष्ट्रीय आय
   (C) फर्म का उत्पादन (D) समग्र मांग
10. एक अलग शाखा के रूप में समष्टि अर्थशास्त्र के अध्ययन का श्रेय किसको जाता है?
    (A) मार्शल (B) पीगू
    (C) कीन्स (D) रैगनरे फ्रिश

[उत्तर : 1. (D), 2. (D), 3. (D), 4. (C), 5. (C), 6. (A), 7. (C), 8. (C), 9. (C), 10. (C)]

Scanned by PDF Scanner